अम्बिकादत्त व्यास (१८५८-१९०० ई०)

संस्कृत भाषा के आधुनिक साहित्यकारों में अम्बिकादत्त व्यास अग्रगण्य हैं। इनमें प्राचीनता और नवीनता दोनों का समन्वय मिलता है। अपने अल्प जीवन-काल तथा प्रायः कष्टमय जीवन-यात्रा के होने पर भी समय और प्रतिभा का सदुपयोग करके इन्होंने हिन्दी-संस्कृत में छोटी-बड़ी ७८ पुस्तकें लिखीं जिनमें कुछ अप्रकाशित हैं। इन्हें सर्वाधिक ख्याति महाराष्ट्र-केसरी शिवाजी के जीवन-वृत्त पर आश्रित संस्कृत उपन्यास 'शिवराजविजय' की रचना से प्राप्त हुई।[1] इसकी रचना इन्होंने १८९८ ई० में की थी किन्तु इसका मुद्रण १९०० ई० में हुआ। इनकी एक संस्कृत कृति 'सामवत' नाटक है जो १८८८ ई० में खड्गविलास प्रेस, पटना से प्रकाशित हुआ था। आधुनिक लेखक होने के कारण तथा सरकारी सेवा में रहने के कारण इनके जीवन से सम्बद्ध बहुत-सी बातें ज्ञात हैं, स्वयं व्यास जी ने 'बिहारी-विहार' की भूमिका में अपने पूर्वजों तथा अपने विषय में भी पर्याप्त सूचना दी है। इनके पूर्वज जयपुर के निवासी थे जो सपरिवार काशी आकर बस गये थे। शैक्षणिक वातावरण से पूर्ण परिवार में व्यास जी की प्रतिभा बालावस्था में प्रकट होने लगी। काशी राजकीय संस्कृत कालेज से आचार्य परीक्षा में उत्तीर्ण होकर इन्होंने बिहार के विभिन्न राजकीय विद्यालयों में शिक्षण कार्य किया। अन्तिम समय में एक-दो वर्षों के लिए वे पटना कालेज में भी अध्यापक थे। १५ नवम्बर १९०० ई० को इनका देहान्त हुआ।

'शिवराज विजय' को स्वयं व्यास जी ने ऐतिहासिक उपन्यास कहा है क्योंकि 'उपन्यास' (novel)की पाश्चात्य विधा में यह ढला हुआ है। यह विधा व्यास जी को बंगला उपन्यासों से प्राप्त हुई थी। 'गद्यकाव्यमीमांसा' नामक ग्रन्थ में इन्होंने लिखा है—

उपन्यासपदेनापि तदेव परिकथ्यते।
यथा कादम्बरी यद्वा शिवराजजयो मम॥

वैसे संस्कृत की प्राचीन व्यवस्था के अनुसार इसे 'आख्यायिका' कह सकते हैं। इसमें तीन विराम हैं, प्रत्येक विराम चार-चार निःश्वासों में विभक्त है। इसका कथानक इस प्रकार है—दक्षिण में मुस्लिम शासकों के अत्याचारों से उद्विग्न होकर शिवाजी (शिवराज) स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष

आरम्भ करते हैं। उन्हें अपने कार्य में क्रमशः सफलता मिलती है। उनकी विजयों से संतप्त बीजापुर का शासक उन्हें मारने के लिए अफजल खान को भेजता है जिसे शिवाजी यमलोक पहुँचा देते हैं। अनेक प्रासंगिक कथाओं के अन्त में शिवाजी के द्वारा सम्पूर्ण महाराष्ट्र की मुक्ति का वर्णन है। इसमें ऐतिहासिक पात्रों के अतिरिक्त अनेक पात्रों की कल्पना लेखक ने की है। शिवराजविजय के द्वारा व्यासजी ने तात्कालिक स्वाधीनता-संग्राम को प्रेरित किया था। शिवाजी-जैसे वीर पुरुष के आगमन की प्रतीक्षा भारतवर्ष की मुक्ति के लिए की जा रही थी।

व्यास की गद्यशैली पर बाण का प्रभाव है जिसमें विषय के अनुरूप गद्यशैली सघन या सरल होती है। शब्दार्थ का सामंजस्य करनेवाली यह शैली 'पाञ्चाली' कही गयी है। उत्कलिकाप्राय गद्य का उदाहरण है-'**पारस्परिकविरोध-विशिथिलीकृत-स्नेहबन्धनेषु राजसु, भामिनी-भ्रूभङ्गभूरिभाव-प्रभावपराभूतवैभवेषु भटेषु .... महामदो यवनः ससैनः प्राविशद् भारते वर्षे।**' इसी प्रकार शिवाजी की प्रशस्ति कवि ने लिखी है- **वीरतासीमन्तिनीसीमन्त-सुन्दरसान्द्रसिन्दूर-दानदेदीप्यमानदोर्दण्डः**।ऐसे स्थल शिवराजविजय में बहुत नहीं हैं। वे सरलता से समझ में आ जाते हैं। इस शैली का उद्देश्य अपने भावों को प्रभावपूर्ण बनाना है, व्यर्थ का आडम्बर दिखाना नहीं।

सामान्यतः व्यासजी की शैली सरलता की ओर ही प्रवृत्त है, यत्र-तत्र अनुप्रासों का सौन्दर्य आकर्षक है जैसे भारतवर्ष की तात्कालिक दशा का चित्रण किया गया है- 'क्वाधुना मन्दिरे जयजयध्वनिः? क्व सम्प्रति तीर्थे तीर्थे घण्टानादः? क्वाद्यापि मठे मठे वेदघोषः? अद्य हि वेदा विच्छिद्य वीथीषु विक्षिप्यन्ते। धर्मशास्त्राण्युद्धूय धूमध्वजेषु ध्मायन्ते। पुराणानि पिष्ट्वा पानीयेषु पात्यन्ते। भाष्याणि भ्रंशयित्वा भ्राष्ट्रेषु भर्ज्यन्ते।' यह सरलता क्रमशः आगे बढ़कर सजीव चित्र खींचती है- 'क्वचिदार्तनादाः, क्वचिद्रुधिरधाराः, क्वचिदग्निदाहः, क्वचिद् गृहनिपातः इत्येव श्रूयतेऽवलोक्यते च परितः।'

'शिवराजविजय' में व्यासजी की चेतना प्राचीन-नवीन दोनों के संगम की है। देशभक्ति, इतिहास, स्वाधीनता तथा धर्मरक्षा की भावनाएँ इसमें समन्वित हैं। यवनों के अत्याचार और शिवाजी के न्यायपूर्ण कार्यों का सूर्योदय दोनों का यथार्थ निरूपण करने में कवि को सफलता मिली है। मुख्य रस तो वीर है किन्तु अन्य रसों की भी उचित उद्भावना हुई है।